

जाट छात्रावास, डीडवाना, नागौर

1. संस्था का नाम— जाट छात्रावास, डीडवाना, नागौर
संचालित संमिति — जाट समाज डीडवाना,
पता— गाढावास, डीडवाना, नागौर

2. इतिहास — किसान छात्रावास, डीडवाना

तत्कालीन मारवाड़ रियासत में सन् 1927 के बाद जाट समाज के सक्रिय बन्धुओं ने जोधपुर, नागौर, मेड़ता, बाड़मेर में जाट बोर्डिंग हाउस/ छात्रावासों की स्थापना कर जाटों के साथ-साथ सभी किसान जातियों के दूर-दराज के ग्रामीण छात्रों की शिक्षा के लिए निरन्तर प्रयास किये। इस मुहिम से चौधरी गुल्लाराम के 'पढ़ो और पढ़ाओ' के नारे को बल मिला। इसी कड़ी में नागौर परगने के डीडवाना कस्बे में भी छात्रावास की आवश्यकता महसूस की गई। इसके लिए बलदेव राम मिर्धा ने हीरा सिंह चाहर (भजनोपदेशक), चतराराम (भामासी) तथा किशनाराम रोज (छोटी खाटू) को भवन/भूमि खोजने का जिम्मा दिया। वर्तमान में 94 वर्षीय पूसाराम सूबेदार (अम्बापा) के अनुसार जाट बन्धुओं ने छात्रावास हेतु गाढावास स्थित कोटा महाराजा (कोटा दरबार) के रघुनाथ मन्दिर को छात्रावास हेतु चिन्हित किया। कोटा महाराजा तथा तत्कालीन पुजारी ने मन्दिर परिसर तथा साथ की भूमि शिक्षा को समर्पित करने की रजामंदी दे दी तथा शर्त रखी कि मन्दिर में पूजा नियमित होती रहे। इस तरह बलदेव राम मिर्धा व अन्य जाट बन्धुओं के प्रयास से यह मन्दिर मय परिसर मात्र 500 रुपये में सन् 1943 में क्रय कर लिया गया। इस कार्य में सूबेदार पन्नाराम (ढींगसरी) तथा बाबू गुल्लाराम चौधरी का बड़ा सहयोग रहा। कबटन खेताराम भाकर के अनुसार सन् 1943 में स्थापित इस छात्रावास के प्रारम्भ में सिंघाना के 08 छात्र पढ़ने लगे जिनमें एक वह स्वयं थे। इस छात्रावास में सभी सभी किसान जातियों के छात्रों को प्रवेश दिया जाता था। अन्य जाट छात्रावासों की भांति इस छात्रावास को भी जोधपुर रियासत से आर्थिक सहायता मिलती थी। छात्रावास की स्थापना से सन् 1946 तक छात्रावास की प्रशासनिक व्यवस्था सूबेदार पन्नाराम मंडा तथा किसान बोर्डिंग हाउस, जोधपुर के जनरल मैनेजर मास्टर रघुवीर सिंह के सहयोग से संचालित होती थी। मारवाड़ के जाट समाज की तरफ से मास्टर रघुवीर सिंह को मारवाड़ में स्थित सभी जाट बोर्डिंग हाउस/छात्रावासों के संचालन में सहयोग हेतु अधिकृत किया हुआ था। प्रारंभिक दौर में किशाना राम रोज (छोटी खाटू) की सेवाएँ भी महत्वपूर्ण रहीं। तत्कालीन समय में छात्रावास के अधीक्षक पद पर सरकारी शिक्षकों की सेवाएँ ली जाती थीं और वे अन्य जातियों के भी होते थे जिनमें बालचन्द शर्मा (1946-48), मोहनलाल शर्मा (1949-50), मोटाराम भाकर बरवड़ा (1950-52) तथा तत्पश्चात् समय-समय पर अन्य लोगों के अलावा दीपाराम मिंडासरी, ज्ञानेन्द्रनाथ अरोड़ा, दूर्जा राम पूनिया आदि कई सेवाभावी व्यक्तियों ने इस पद पर रह कर शिक्षा की मुहिम को गति प्रदान की। वर्तमान में भंवरा राम कूडी (ध्यावा) इस छात्रावास के अधीक्षक हैं।

सन् 1953 के दौरान आर्थिक संकट के कारण रामनिवास मिर्धा, नाथूराम मिर्धा, मूलचन्द चौधरी, किशनाराम रोज आदि समाज बन्धुओं ने छात्रावास संचालन हेतु आर्थिक सहायता की अपील जारी की। 1956-57 ई. में किसान बोर्डिंग हाउस, जोधपुर की सहयोगी संस्था के रूप में किसान छात्रावास, डीडवाना को उपशाखा के रूप में पंजीकृत करवाया गया। पूर्व के विवरणानुसार डीडवाना छात्रावास को भी राजस्थान सरकार से नियमित अनुदान मिलता था। इस कार्य में पंचायत राज के नागौर के प्रथम जिला प्रमुख लिखमाराम चौधरी का सराहनीय योगदान रहा।

किसान बोर्डिंग हाउस, डीडवाना की कार्यकारिणी के अध्यक्ष पद पर अलग अलग समय में चतराराम मुवाल, भामासी (1952–60); चौधरी चौनाराम रायल, बडावरा(1960–75); चौधरी भोमाराम लोमरोड़, विजयपुर (1976–86); एडवोकेट दुर्जाराम पूनिया, श्यामपुरा(1976–90); जीवन राम जैलर, कोलिया (1990–2000); लक्ष्मणसिंह पावड़िया, अम्बापा (2000–04); जीवनराम गोदारा, भामासी (2004–2006); एडवोकेट दुर्जाराम पूनिया, श्यामपुरा (2006–16) तथा गुल्लाराम ढाका, केराप (पूर्व प्रधान), सन् 2016 से निरंतर हैं।

किसान छात्रावास डीडवाना का पुनर्निर्माण एवं मरम्मत

सन् 1943 में छात्रावास स्थापित हो जाने के बाद सन् 1980 के आसपास छात्रावास का भवन जर्जर होने लगा तथा संस्था के खेल मैदान पर अतिक्रमण होने लगा। इस परिस्थिति में डीडवाना के पूर्व विधायक एवं प्रधान भोमाराम चौधरी ने दानदाताओं से आर्थिक सहयोग लेकर आवश्यक निर्माण कार्य करवाये तथा खेल मैदान की चारदीवारी बनवाई। इस पुनीत कार्य में संस्था के प्रथम विद्यार्थी कप्तान खेताराम भाकर तथा सूबेदार पुसाराम पावड़िया एवं अन्य समाजसेवियों ने सहयोग किया। पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री रामनिवास मिर्धा ने संस्था को इफको से सात लाख रु. दिलवाये एवं प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे छात्रों के लिए पुस्तकों की व्यवस्था करायी। नागौर के पूर्व सांसद भंवरसिंह डांगवासा के सांसद कोष से कुण्ड बनवाया गया। इसके अतिरिक्त श्री गणपतराम ठोलिया मिंडासरी ने छात्रावास में पुस्तकालय भवन का निर्माण करवाया।

किसान छात्रावास, डीडवाना के नये भवन का निर्माण

सन् 2008 से 2015 के मध्य नये छात्रावास भवन का निर्माण भामाशाहों एवं दानदाताओं के सहयोग से करवाया गया जिसमें 31 कमरे दो सीट वाले, 03 कमरे तीन सीट वाले, एक वार्डन आवास, कार्यालय, सहित 37 कमरे हैं। मैस (भोजनशाला) एवं कुण्ड का निर्माण भी करवाया गया। इस तरह अब यहाँ 71 छात्रों के आवास की सुविधा है। इस निर्माण कार्य पर लगभग नब्बे लाख रु. व्यय हुए। 21 भामाशाहों द्वारा एक-एक कमरे का निर्माण करवाया गया। किसान छात्रावास, डीडवाना के नये भवन का लोकार्पण समारोह दिनांक 21 अक्टूबर 2015 को रामेश्वर डूडी तत्कालीन नेता प्रतिपक्ष, राजस्थान विधानसभा के मुख्य आतिथ्य एवं श्री हनुमान बेनिवाल तत्कालीन विधायक, खींवसर की अध्यक्षता में हुआ।

किसान छात्रावास, डीडवाना के पूर्व विद्यार्थियों में से वर्तमान में कब्बटन खेताराम भाकर (सिंघाना) आज भी तत्कालीन सुनहरी यादों को संजोये हुए हैं। इनके अनुसार, एक वर्ष में ही सूबेदार पन्नाराम मंडा (ढींगसरी) के प्रयासों से छात्रावास में छात्र संख्या 80 के करीब हो गयी थी। खेताराम भाकर दो वर्ष बाद 18 नवम्बर सन् 1945 को तत्कालीन ग्रेडियर्स रेजीमेन्टल सेन्टर, नसीराबाद में सेना में भर्ती हो गये और 02 फरवरी सन् 1967 को आर्मी से सेवानिवृत्त होने से लेकर निरन्तर समाज सेवा में लगे हुए हैं। पूर्व छात्र 90 वर्षीय गणेशराम रोज (छाजोली) ने बताया कि वे नागौर छात्रावास से सन् 1944 में डीडवाना छात्रावास में आये तथा यहाँ पर सन् 1952 तक रहकर पढ़ाई की और तत्पश्चात् पुलिस सेवा में चयनित हुए। डीडवाना किसान छात्रावास के आरम्भिक दौर के कई पूर्व विद्यार्थियों से साक्षात्कार करने पर कई महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्राप्त हुईं। विश्वबन्धु रोज 88 वर्षीय पूर्व छात्र (छात्रावास में निवास 1945–1950) ने बताया कि किसान छात्रावास में प्रवेश में कोई जातीय भेदभाव नहीं होता था। विश्वबन्धु रोज के अनुसार यहाँ पर भगवानसिंह रावणा राजपूत (सांबराद), तथा कल्याणसिंह राजपूत (सिंघाना), ईश्वरदास स्वामी (मिंडासरी) तथा पूसाराम स्वामी (कोलिया) भी इसी छात्रावास में रहे। विश्वबन्धु रोज ने शिक्षा

ग्रहण करने के पश्चात् सरकारी शिक्षक के रूप में सेवा प्रारम्भ की तथा सन् 1992 में प्राचार्य पद से सेवानिवृत्त हुए। विश्वबन्धु रोज के अनुसार जायल क्षेत्र में लड़कों को शिक्षा के प्रति प्रेरित करने का कार्य रामजीवन रोज ने किया।

जोचीणा (जायल) के सीवर परिवार को शिक्षित करने में किसान छात्रावास, डीडवाना का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। सीवर परिवार में सबसे बड़े भाई भीयाराम ने अपनी शिक्षा जोधपुर में प्राप्त की, लेकिन इनसे छोटे तीनों भाइयों ने किसान छात्रावास, डीडवाना की आवासीय सुविधा का लाभ उठाया। शिवराम सीवर (उपायुक्त, वाणिज्य कर विभाग), हिम्मत सिंह (सफल व्यवसायी तथा पूर्व प्रधान जायल) तथा सबसे छोटे भाई डॉ. सहदेव चौधरी वर्षों तक नागौर जिले के मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी रहे तथा आज भी समाज को उनका मार्गदर्शन मिल रहा है।

एडवोकेट दुर्जाराम पूनियां (श्यामपुरा, लाडनू) ने सन् 1946 से 1952 तक इस छात्रावास में रहकर पढ़ाई की। साथ ही इनके तीनों भाइयों अमाना राम (तहसीलदार), प्रेमराम पूनियां (सेवानिवृत्त अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक) तथा सबसे छोटे डॉ. मालचन्द पूनिया (सेवानिवृत्त उपनिदेशक चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग) ने भी इसी छात्रावास में रहकर शिक्षा प्राप्त की। डॉ. गुलाबसिंह बेन्दा (सेवानिवृत्त पशु चिकित्सक) (रींगण, लाडनू), डॉ. हेमाराम सीवर (जोणीचा), डॉ. जयनारायण बेन्दा तथा डॉ. टीकाराम (बाकलिया) – आदि ने भी प्रारम्भिक शिक्षा इसी छात्रावास में रहकर प्राप्त की।

प्रारम्भिक दौर में सन् 1943 से 1951 तक किसान छात्रावास, डीडवाना में स्कूली शिक्षा हेतु आसपास के गाँवों से छात्र आकर रहते थे जिनमें मुख्यतः डीडवाना, जायल तथा लाडनू क्षेत्र के छात्र अधिक होते थे। सन् 1951 में यहाँ पर उच्च शिक्षा हेतु बांगड़ इन्टरमिडियेट महाविद्यालय की स्थापना हुई। बांगड़ महाविद्यालय, डीडवाना, मारवाड़ में जोधपुर के बाद सबसे पुराना उच्च शिक्षा केन्द्र था जो सन् 1958 में स्नातक स्तर का कॉलेज बना जबकि बलदेवराम मिर्धा राजकीय महाविद्यालय, नागौर की स्थापना सन् 1969 में हुई। इसलिए नागौर जिले के अलावा अन्य स्थानों से ग्रामीण छात्र डीडवाना में उच्च शिक्षा हेतु आते थे। किसान बोर्डिंग हाउस, डीडवाना के तत्कालीन अधीक्षक दुर्जाराम पूनियां के अनुसार नागौर जिले में एकमात्र कॉलेज होने के कारण यहाँ पर अध्ययन हेतु आने वाले छात्रों की आवासीय समस्या का समाधान भी एकमात्र किसान छात्रावास ही था। इसी छात्रावास के पूर्व छात्र आईदान राम रेवाड़ (खारड़िया) जिन्होंने सन् 1961 से 1964 तक बांगड़ महाविद्यालय में स्नातक तक अध्ययन किया, ने बताया कि छात्रावास में सीमित आवासीय व्यवस्था होने के कारण कॉलेज के विद्यार्थी आसपास अन्यत्र निजी मकानों में रहते थे लेकिन इनकी भोजन व्यवस्था किसान छात्रावास में ही होती थी। किसान छात्रावास के पूर्व वयोवृद्ध छात्र प्रेमराम कुंकणा (पाटण, एलिचपुरा) के अनुसार तत्कालीन समय में ग्रामीणों के पास नकद धन का अभाव होता था इसलिए छात्रावास के छात्रों से 22.50 किलोग्राम बाजरा के साथ अन्य खाद्य सामग्री प्रति माह सामूहिक भोजन हेतु मंगवाई जाती थी। कभी-कभी मक्का की घाट तथा कभी बाजरे के खीच के साथ गुड़ की गलवानी बनाई जाती थी। निर्धन विद्यार्थियों के लिए भोजन व्यवस्था समाज बन्धुओं के आर्थिक सहयोग से होती थी।

(उपरोक्त सभी पूर्व छात्रों से व्यक्तिगत साक्षात्कार कर समस्त जानकारीयों का संकलन सेवानिवृत्त प्रोफेसर एन.आर. ढाका ने किया)

3. कार्यकारिणी सदस्य – अध्यक्ष कार्यकाल

क्र.स.	नाम	कार्यकाल
1.	श्री चतराराम मुवाल, भामासी	1952–60
2.	चौधरी श्री चौनाराम रायल, बडावरा(;	1960–75
3.	चौधरी श्री भोमाराम लोमरोड़, विजयपुर	1976–86
4.	एडवोकेट श्री दुर्जाराम पूनिया, श्यामपुरा	1976–90
5.	श्री जीवन राम जैलर, कोलिया	1990–2000
6.	श्री लक्ष्मणसिंह पावड़िया, अम्बापा	2000–04
7.	श्री जीवनराम गोदारा, भामासी	2004–2006
8.	एडवोकेट श्री दुर्जाराम पूनिया, श्यामपुरा	2006–16
9.	श्री गुल्लाराम ढाका, केराप (पूर्व प्रधान),	सन् 2016 से निरंतर.....

व्यवस्थापक सूची –

क्र.स.	नाम	कार्यकाल
1.	श्री बालचन्द्र शर्मा	1946–48
2.	श्री मोहनलाल शर्मा	1949–50
3.	श्री मोटाराम भाकर बरवड़ा	1950–52
4.	श्री दीपाराम मिंडासरी	
5.	श्री ज्ञानेन्द्रनाथ अरोड़ा	
6.	श्री दूर्जा राम पूनिया	
7.	श्री भंवरा राम कूडी (ध्यावा)	वर्तमान व्यवस्थापक

कार्य कारिणी सदस्यों की संख्या 21 है—

1. अध्यक्ष – श्री गुलाराम जी ढाका
2. कोषाध्यक्ष – श्री बलदेव राम जी दोलिया

4. भौतिक संसाधन –यह छात्रावास 1943 से संचालित है। उस समय का भवन समयान्तराल से जर्जर हो गया तत्पश्चात पुनःनिर्माण एवं नवीन निर्माण करवाया गया। छात्रावास में 37 आवासीय कमरें, मैस, वार्डन आवास, कार्यालय आदि बने हुए हैं एवं 71 छात्रों की आवासीय क्षमता है।

5. छात्रावास आवेदन प्रक्रिया – छात्र का प्रवेश मॅरिट के आधार पर होता है। (50 प्रतिशत अनिवार्य)

- 10वीं 12वीं की अंकतालिका
- चरित्र प्रमाण पत्र
- आधार कार्ड

6. विद्यार्थियों का विवरण – कुल 77 विद्यार्थी

- 1 से 12 वी तक 10
- कॉलेज विद्यार्थी 20
- कम्पीटिशन की तैयारी करने वाले 47 विद्यार्थी
- वार्डन 01
- रसोईयाँ 02

विशेष समारोह – 01 जनवरी, 26 जनवरी व 15 अगस्त

अन्य स्रोत – समाज ट्रस्ट द्वारा आय प्राप्त होती है।

भोजन – प्रत्येक कमरों में 02 विद्यार्थी रहते हैं।

भोजन के लिए अलग से मैस चलता है।

7. छात्रावास के नजदीक विद्यालय –

1. विवेकानन्द सी. सै. स्कूल
2. राजकीय बागड़ महाविद्यालय
3. छोटी देवी एज्यूकेशन ग्रुप
4. ग्रामोत्थान विद्यापीठ

8. दानदाता सूची – पीडीएफ

भासाशाउगे व

21000	श्री रामनिवास खोखर	S/o जैसारा	जी खोखरो का बास	21
21000	" नारायणराम डुडी	S/o दीनाराम	जी मंडुकरा	13
21000	" गणपतराम जाखड़	S/o सुखाराम	जी आजवा	11
21000	" मदनलाल बलारा	S/o जुगल किशोर	जी मौलासर	11
21000	" राजेन्द्र सिंह लील	S/o कानाराम	जी रसीदपुरा	11
21000	" सुरेन्द्र सिंह जाखड़	S/o सुरज भान	जी दिनदारपुरा	1
21000	" लिखमणराम भाकर	S/o कुम्भाराम	जी फोगडी	1
21000	" भगवानाराम रेवाड़	S/o गंगाराम	जी खारडिया	1
21000	" स्वांगाराम खिलेरी	S/o पेमाराम	जी डिगाल	1
21000	" गोविन्दराम धुत	S/o बेगाराम	जी कुशलपुरा-लाडनू	1
21000	" डॉ. ओमप्रकाश चौधरी	S/o शिवलाल	जी बोड़वा जायल	1
21000	" हरदीनराम जाखड़	S/o मंगलाराम	जी आजवा	
21000	" हणुताराम जाखड़	S/o लादुराम	जी आजवा	
21000	" भंवरलाल जानू	S/o हनुमानराम	जी कलवानी	
21000	" गजेन्द्र सिंह ठेकेदार	S/o रुड़मल सिंह	जी डीडवाना	
21000	" इन्द्र सिंह मुवाल	S/o टोडाराम	जी भामासी	
21000	" विनोद चौधरी (LIC)	S/o हरिसिंह	जी डीडवाना	
21000	" प्रेमराम कुकणा	S/o जीवणराम	जी पाटण	
21000	" डॉ. ईश्वरराम बाजिया	S/o बलदेवराम	जी बिजापुरा नावा	
21000	" हेमाराम थारी	S/o हरजीराम	जी जतनपुरा	
21000	" हरीश ठोलिया	S/o रेखाराम	जी शिमला	
21000	" भंवराराम भूरिया	S/o बालूराम	जी आजवा	
21000	" अशोक कुमार टाका	S/o भुमरराम	जी केराप	
21000	" गिरधारीलाल बुगालिया	S/o कानाराम	जी दयालपुरा	
21000	" सुरेन्द्र सिंह नेहरा	S/o रामचन्द्र	जी पायली	
21000	" रामनिवास ईशरावा	S/o भंवरलाल	जी दताऊ	
21000	" नारायणराम बुरडक	S/o खेमराम	जी नोरगपुरा	
21000	" राजुराम भाकर	S/o भागीरथराम	जी बेगसर	

